डॉ० शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस० आर० ए० पी० कॉलेज,
बारा-चकिया।

B. A. Part-II
हिन्दी प्रतिष्ठा
Paper - IV

Date-25-01-2022

Ajanta
Page No.
Date

'कानों में कंगना' कहानी का सारांश

नरेन्द्र किरन से पूछता है कि उसके कानों में क्या है? किरन उससे कहती है कि कंगना है। किरन अभी भोली थी। वह सुंदर है। लेखक ने उसके रूप का वर्णन प्रकृति के माध्यम से किया है।

सन्ध्या के समय आकाश स्वच्छ था। सुनहली किरणें पर्वत की चोटी से देख रही थीं पतली किरन सूने निविड़ कानन में क्या ढूंढ रही थी? मैं इस संबंध में कुछ भी नहीं बता सकता हूँ। मैं निरन्तर उसे देखता रहता था। आकाश के चमकते हुए तारे और उसकी आँखें एक समान ही प्रतीत होती थीं।

मैं रसाल की डाली पकड़कर खड़ा था। वह कंगन दिखाने के लिए व्याकुल दिखाई दे रही थी। उसकी भाव-भंगिमाएँ मुग्ध करने वाली थीं। मेरी आँखों के समक्ष किरण प्रतिदिन आती ही जाती थी। वह मेरे लिए मौलसिरी के फूलों की माला बनाकर लाती थी और कभी दूसरी वस्तुएँ लाती थी। कौन जानता था कि कानों के कंगन भूलकर कानों में पहिनने में इतना माधुर्य विद्यमान है। मैंने उसके कानों से कंगन उतार लिया। मैं कंगन उसके अंगुलियों पर चढ़ाने लगा। मैं भावुक होकर किरण से कहा कि यह घटना मुझे मृत्य तक नहीं भूलेगी। उसे सुनकर आश्चर्य हुआ।

Scanned by CamScanner

मैं उसी क्षण योगीश्वर की कुटी की ओर चल दिया।

मैं पिता की आज्ञा के अनुसार योगीश्वर के यहाँ धर्म-ग्रंथ पढ़ने जाया करता था। किरन योगीश्वर की लड़की थी। मैं बाबा के कहने पर एक जोड़ा पीताम्बर, पाँच स्वर्ण मुद्राएँ और किरन के लिए दो कनक कंगन योगीश्वर के समीप ले गया था। योगीश्वर ने मुझे सब लौटा दिए, केवल कंगन को किरन उठा ले गई। मैं किरन से प्रेम करता हूँ, यह योगीश्वर भली-भाँति समझ गए थे। उन्होंने मुझसे कहा- "नरेन्द्र, अब मैं चला किरन तुम्हारे हवाले है।" वे रुके नहीं और उन्होंने प्रस्थान कर दिया। मुझे आश्चर्य हुआ और किरण देखती रह गई। मुझे स्वयं पर विश्वास नहीं हुआ। मैं आत्म-ग्लानि से पीड़ित हो उठा। किरन भी मुझे प्रेम करती थी। किशोरावस्था में किरन और भी आकर्षक लगने लगी थी।

मोहन के द्वारा मैं किन्नरी के सम्पर्क में आया। मैं किन्नरी के प्रति आसक्त हो गया। ऐसी स्थिति में कुल की प्रतिष्ठा और पत्नी से पवित्र प्रेम, सभी वासना में भस्म होने लगे। पाँच महीने उसके साथ रहने के बाद भी नशा नहीं उतरा। किन्नरी के प्रति मेरे मोह के विषय में किरण भली-भाँति परिचित थी। मैंने किरन के

Scanned by CamScanner

लगभग सभी आभूषण किन्नरी को दे दिए। अन्त में एक दिन किन्नरी को कोई आभूषण देने के लिए मैं किरन से कोई गहना माँगने लगा। किरन ने मुझे वही कानों का कंगना दे दिया। मुझे उस समय होश आया जब जीवन में केवल अन्धकार ही रह गया।

Scanned by CamScanner